Sem. 3, MN-1B

'निर्मला' उपन्यास का उद्देश्य/समस्या-चित्रण

हिन्दी उपन्यास साहित्य के स्वनामधन्य हस्ताक्षर मुंशी प्रेमचन्द की अमर कृति 'निर्मला' अपनी औपन्यासिक विशेषताओं के कारण विशिष्ट है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में भारत के यथार्थ जन-जीवन और उसकी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। 'निर्मला' उपन्यास के संबंध में 'कलम का सिपाही' में अमृतराय लिखते हैं — "इतनी सच्ची, मार्मिक, खासकर औरतों के दिल को मानेवाली कहानी मुंशीजी ने दूसरी नहीं लिखी। पढ़ने वाले दहल उठे, रो-रो पड़े। कैसा डरावना आईना उन्होंने समाज के सामने उठाकर रख दिया था।" वस्तुतः यह उपन्यास भारतीय नारी के जीवन में व्याप्त अनेक त्रासद समस्याओं का चित्रण करता है।

स्वतंत्रतापूर्व भारत की नारी जाति को जिन सामाजिक स्थितियों-परिस्थितियों के कारण नारकीय जीवन के लिए विवश होना पड़ता था, उसका जीवन्त रूप इस उपन्यास में दिखाई पड़ता है और यही इस उपन्यास का उद्देश्य है। यहाँ निम्नलिखित समस्याएँ चित्रित हैं। —

(1) दहेज — प्रस्तुत उपन्यास में दहेज-प्रथा के गम्भीर दुष्परिणामों को दिखाया गया है। निर्मला के पिता बाबू उदयभानुलाल के संबंध में प्रेमचंद लिखते हैं — "वकील उदयभानुलाल की कमाई तो खासी थी लेकिन उनमें संचय-वृत्ति नहीं थी।" पिता की आकस्मिक मृत्यु के कारण निर्मला का विवाह पहले से तय भालचंद्र सिन्हा के बेटे भुवनमोहन से टूट जाता है; क्योंकि 'प्राणी का कोई मूल्य नहीं, दहेज का मूल्य है। दहेज नहीं तो सारे गुण दोष हैं और दहेज है तो सारे दोष गुण हैं।' निर्मला की माँ कल्याणी के करुण निवेदनों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। भुवनमोहन अपने पिता से कहते हैं- 'कहीं ऐसी जगह शादी करवाइये कि खूब रुपये मिलें।' विवाह टूटने के बाद कल्याणी अपनी पुत्री के लिए दहेज न जुटा पाने के कारण अधेड़ उम्र के विधुर तोताराम से रिश्ता तय करती है, जिसके पहले ही तीन पुत्र हैं। यहीं से निर्मला के त्रासद जीवन का प्रारंभ होता है।

(2) अनमेल विवाह — प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित एक प्रमुख समस्या अनमेल विवाह है। पुरुष-प्रधान समाज में स्त्री की पराधीनता की समस्या अनमेल विवाह की स्थिति को जन्म देती है। दहेज की कुप्रथा के कारण जब पं० मोटेराम कल्याणी के समक्ष निर्मला के लिए अधेड़-

विधुर मुंशी तोताराम का विवाह-प्रस्ताव लाते हैं, तो कल्याणी कहती है - "पैंतालीस साल का आदमी बुड्ढा नहीं कहलाता। अगर लड़की के भाग्य में सुख भोगना बदा है, तो जहाँ जाएगी सुखी रहेगी।" इस अनमेल विवाह के बाद तोताराम निर्मला को प्रसन्न रखने के अनेक प्रयत्न करते हैं किन्तु उसे तोताराम के पास बैठने और हंसने-बोलने में संकोच होता है। क्योंकि "अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह चुराकर निकलती थी। अब उसी अवस्था का एक आदमी उसका पति था।" इसीलिए, उसकी मित्रता अपने हमउम्र सौतेले बेटे मंशाराम से होती है, जो उसके परिवार की त्रासदियों के मूल में था।

③ विधवा-जीवन — उपन्यास में कल्याणी और रुक्मिणी के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय हिन्दू विधवाओं की करुण गाथा को चित्रित किया है। मुंशी तोताराम की बहन रुक्मिणी तिरस्कृत तथा अपमानित जीवन जीनेवाली विधवा, जो भाई के यहाँ आश्रय पाती है। वह यहाँ नौकरों जैसा व्यवहार पाती है। तोताराम स्वयं कहता है - "मैंने तो सोचा था कि विधवा है, अनाथ है, पाव भर आटा खायेगी, पड़ी रहेगी। जब और नौकर-चाकर खा रहे हैं तो यह तो अपनी बहिन ही है, लड़कों की देखभाल के लिए एक औरत की जरूरत भी थी, रख लिया।" इसी तरह, कल्याणी उदयभानुलाल की विधवा है, जो दो पुत्रियों और एक पुत्र की माँ है। निर्मला के विवाह के लिए बाबू भालचंद्र के नाम निवेदन-पत्र में कल्याणी लिखती है — "इस अनाथिनी पर दया कीजिये और डूबती हुई नाव को पार लगाइए।"

उपन्यास में अन्य सामाजिक समस्याओं पर भी यथेष्ट प्रकाश डाला गया है। इनमें एक है साधुओं का पाखण्ड, जो सियाराम के साधु बनने के प्रसंग से स्पष्ट है। सियाराम को चेला बनानेवाला साधु की कपटवृत्ति पर प्रेमचंद कहते हैं कि ये ढोंगी साधु बच्चों को लेजाकर अपनी सेवा करवाते हैं, भीख मंगवाते हैं, पैर दबवाते हैं, चिलम भरवाते हैं और ऐश-आराम करते हैं। दूसरी समस्या अंधविश्वास की है। यहाँ सुधा के पुत्र सोहन को नजर लग जाने पर अंधविश्वास का प्रसंग है। पहले महँगू, फिर मौलवी नजर उतारते हैं। किन्तु सोहन को बुखार का इलाज नहीं हुआ और वह मर जाता है। इसी प्रकार, आत्महत्या की समस्या को भी प्रेमचंद ने यहाँ उठाया है। एक ओर बिगड़े हुए युवा वर्ग के प्रतिनिधि जियाराम की आत्महत्या है, जो चोरी के अपराध में पकड़े जाने के डर से आत्महत्या कर लेता है। दूसरी ओर डॉ० भुवन हैं, जिन्होंने निर्मला से विवाह के लिए दहेज के कारण अस्वीकार किया था, आज पश्चात्ताप की आग में जलते हुए आत्महत्या का मार्ग चुनते हैं।

मुंशी प्रेमचंद ने प्रस्तुत उपन्यास में नारी-जीवन से

जुड़ी विभिन्न समस्याओं के प्रति जागरूक करते हुए देश के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह किया है। उपन्यास में जिस संदेश के प्रति उपन्यासकार की पक्षधरता है, उसे निर्मला के शब्दों में इस प्रकार जाना जा सकता है। "मृत्युशय्या पर पड़ी अपनी बच्ची को रुक्मिणी के हाथों सौंपते निर्मला कहती है – "अगर जीती-जागती रहे तो अच्छे कुल में विवाह कर दीजियेगा। चाहे कँवारी रखियेगा, चाहे विष देकर मार डालियेगा, पर कुपात्र के गले न मढ़ियेगा, इतनी-सी ही आपसे मेरी विनय है।" निश्चय ही, 'निर्मला' उपन्यास दहेज एवं अनमेल विवाह तथा उनके दुष्परिणामों, अंधविश्वास, विधवा-समस्या, ढोंगी साधुओं, आत्महत्या, थिएटर, छात्रावासों, अस्पतालों आदि सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार कर इनके लिए बेहतर व्यवस्था की मानसिकता विकसित करता है।